दादी पुष्पशान्ता

आपका लौकिक नाम गुड्डी मेहतानी था, बाबा से अलौकिक नाम मिला 'पुष्पशान्ता'। बाबा आपको प्यार से गुड्डू कहते थे। आप सिन्ध के नामीगिरामी परिवार से थी। आपने अनेक बंधनों का सामना कर, एकधक से सब कुछत्याग कर स्वयं को यज्ञ में संपूर्ण रूप से समर्पित किया। आप बहुत ही गम्भीर, शान्तमूर्त, धारणा-स्वरूपा थी। आपमें पालना के विशेष संस्कार थे। शुरू से ट्रांस मैसेन्जर भी रही। मुंबई में कोलाबा सेवाकेन्द्र पर रहकर महाराष्ट्र की सेवाओं में अपना योगदान दिया। आप 7 फरवरी, 1983 को पुराना शरीर छोड़ अव्यक्त वतनवासी बनी।

दादी पुष्पशान्ता की चौथे नंबर की संतान (सुपुत्री) 'माता विष्णु प्रिया' के नाम से अपने मठ में जानी जाती हैं। वे अपनी माता पुष्पशान्ता के प्रति हार्दिक भावनायें इस प्रकार व्यक्त करती हैं-

पीछे मुड़कर कभी भी नहीं देखा

80 साल की आयु में, स्मृति को उस समय की ओर ले जा रही हूँ जब मैं छह वर्ष की थी और उस भविष्यसूचक दिवस को याद करती हूँ जब हमारी परमप्रिय माँ दादी पुष्पशान्ता ने घर छोड़ा था। दोपहर के लगभग 3 बजे थे, सूर्य आग उगल रहा था। हमारी माँ अपनी दैनिक ओम मण्डली की क्लास में उपस्थित होने के लिये गईं। यही वह विशेष दिन था, जब माँ ने अपना घर-संसार छोड़ दिया और फिर पीछे मुड़कर कभी भी नहीं देखा। उन्होंने अपना यह फैसला बहुत सोच-विचार कर और आत्म-विवेचन के बाद लिया था। निश्चित रूप से उस अन्जान स्थान पर चले जाना आसान नहीं रहा होगा। उन्होंने घर और बच्चों पर अपने को पूर्णतः समर्पित किया था; उनको पीछे छोड़ना, जिन्हें उन्होंने जाना और प्यार किया, निश्चित रूप से बहुत कठिन और वेदना से परिपूर्ण रहा होगा। उन्हें इस प्यार के बंधन को, दिल की तार से झटके से खींचना पड़ा होगा। पांच छोटे बच्चों को भगवान् के भरोसे छोड़ना, जिनकी आयु 12, 8, 7, 6 और 3 थी, कोई मज़ाक नहीं था।

सारा विश्वास सर्वशक्तिवान पर कायम रखा

उन्होंने बाद में मुझे बताया, उन्होंने यह तर्क दिया था कि यदि उनकी मृत्यु हो जाती तो निश्चित रूप से भगवान् ही उनके बच्चों की देखभाल करेंगे और उस स्थिति में हरेक को अपनी नियति का पालन करना होता है। अतः उन्होंने अपना सारा विश्वास सर्वशक्तिमान पर कायम रखा, और उस 'अज्ञात मार्ग' पर कूद पड़ीं। भगवान ने उन्हें बुलाया था, उन्होंने वह पुकार सुन ली थी, इसलिये उन्हें तो जाना ही था। हम चार छोटे बच्चे (सबसे बड़े भाई की पालना जापान में हो रही थी) माँ से लिपटे हुए उनकी साड़ी खींचते रहे; हम नहीं चाहते थे कि वह हमें छोड़ कर जाये। हम सबमें सबसे छोटी, सती, जो तीन साल की थी, बहुत ज़ोर से रोई और उसने अपनी नन्हीं बाँहें उनकी ओर कर दीं। परन्तु, माँ ने हल्के से अपने आपको उसकी नन्ही बांहों से बन्धनमुक्त किया, जिनसे उसने कसके पकड़ा हुआ था, फिर तेजी से सीढ़ी उतर कर नीचे सड़क पर चली गईं और हमारी नजरों से ओझल हो गईं। वह वर्ष 1938-39 था। बहुत साल बाद, माँ ने मुझे बताया कि उस नन्ही सती का जोर से रोना उनके कानों में बार-बार गूंजता रहा और उनको उस भविष्यसूचक दिन को भूलने में तीन साल लगे। एक ममतामयी माँ के लिये उसके बच्चों को छोड़ना कोई मज़ाक नहीं था परन्तु उन्हें मजबूरन ऐसा करना पड़ा। वह हमको अपने साथ ओम मण्डली में रखना चाहती थी परन्तु पिता जी सबको वापस ले आए। इस प्रकार लौकिक जीवन से मरकर ब्रह्माकुमारी दादी पुष्पशान्ता के रूप में उन्होंने पुनर्जन्म लिया। उनकी हिम्मत और सामर्थ्य को मेरा सादर नमन।

सत्रह वर्षों तक सम्पर्क नहीं हुआ

माँ ने यज्ञ-भट्ठी के आरम्भ के वर्ष बाबा के निरीक्षण और मार्गदर्शन में, आध्यात्मिक अनुशासन का अभ्यास करते हुए बिताये। सत्रह वर्षों के लम्बे काल तक, हमारी माँ और हमारे बीच कोई सम्पर्क नहीं हुआ। इस बीच, हम बच्चे बड़े हो गये थे और अपनी धनी जीवनशैली पूर्वी और पश्चिमी संस्कृतियों के सम्मिश्रण में अच्छी तरह रम चुके थे।

फिर वह समय आया जब बाबा ने हमारी माँ को बॉम्बे के कोलाबा क्षेत्र में पहला सेवाकेन्द्र खोलने के लिये भेजा। मैं उनकी वो पहली सन्तान थी, जो अपने परिवार (ससुराल) के सदस्यों सहित उनके सम्पर्क में आई। हमारी माँ और मैं एक ही लिफ्ट

में एक-दूसरे के सामने थे और दोनों ने एक-दूसरे को पहचाना नहीं जब तक कि मैंने परिचय नहीं कराया। यह काफी नाटकीय था।

आन्तरिक अच्छाई और स्नेही स्वभाव

मेरे वाटूमल परिवार ने माँ को बड़े विशाल दिल के साथ प्यार किया। बड़े गर्व के साथ मुझे याद है, हमारे साथ-साथ, जो कोई भी उनके सम्पर्क में आया उसे उनसे तुरन्त ही स्नेह हो गया और बड़े आकर्षण के साथ उनकी ओर खिंचा चला आया। उनकी आन्तरिक अच्छाई और स्नेही स्वभाव प्रशंसनीय थे। सदा मुस्कराती हुईं वे सभी को अपने आकर्षण में बाँध लेती थीं, एक सच्ची स्वाभाविक दाता के गुण थे उनमें। जब मैंने उनके गुजर जाने की खबर सुनी, तब मैंने हर किसी को यह कहते हुए सुना कि दादी ने हमें बहुत प्यार दिया था।

उच्च विचार भरे

मुझे एक स्नेही, ध्यान रखने वाली माँ के रूप में भी उनकी याद आती है। वह हम बच्चों की हर बात पर विशेष ध्यान देती थीं। वह एक शानदार कुक (खाना पकाने वाली) थीं। वह हमें चुनिंदा भोजन खिलाती थीं। एक महान अनुशासक के रूप में उन्होंने हमें अच्छी आदतें और आचरण सिखाये। उन्होंने हममें उच्च विचार भरे थे, जिनसे बाद में हमें अपनी ज़िन्दगियों को आकार देने में सहायता हुई। एक असाधारण व्यक्ति के रूप में उन्होंने हम सब बच्चों पर अविस्मरणीय छाप छोड़ी।

विलासिता की गोद में भी शून्यता का अहसास

उन्होंने एक धनवान घर में एक सुखपूर्ण जीवन जीया था। उन्होंने अपना ज़्यादा समय जापान में बिताया जहाँ मेरे दो बड़े भाइयों का और मेरा भी जन्म हुआ था। हमारी एक आया थी जो जापान में हमारा ध्यान रखती थी यह कुछ ऐसा था जो उन दिनों में आसामान्य था। विलासिता की गोद में रहने के बावजूद, माँ ने एक बार मुझे बताया कि उन्हें उनके भीतर एक महान शून्यता की महसूसता उस समय से अनुभव हो रही थी, जब वे अपने पैतृक घर में थीं और यह शून्यता भौतिक पदार्थों से भरी नहीं जा सकी। घर में सबसे बड़ी सन्तान होने के कारण, उनके अभिभावकों और भाई-बहनों की देखभाल की ज़िम्मेदारी उनके नाज़ुक कन्धों पर आ गई थी।

आंतरिक भूख के कारण, वह अपना कुछ समय निकालकर शास्त्रों और धर्मग्रन्थों का गहन अर्थ समझने में लग गई और अपने आपको भक्ति से सराबोर कर दिया। फिर भी उन्हें किसी विशेष बात की कमी महसूस होती ही रही; उन्होंने मुझे बताया कि उन्हें भक्ति से अधिक किसी और चीज़ की आवश्यकता थी, जो उन्हें बाद में निराकार शिव परमात्मा द्वारा प्रचुर मात्रा में मिल गई। यह तब की बात है, जब उन्होंने अन्ततः अपने आपको भरपूर अनुभव कर लिया था। अवश्य ही यही उनके लिये आदेश था।

माँ अपनी सर्व बहनों को यज्ञ में ले आईं। परन्तु वह जो अन्त समय तक माँ के साथ रहीं, जो 13 वर्ष की अल्प आयु में इस मार्ग में माँ के साथ जुड़ गई, वह बाल ब्रह्मचारिणी हमारी मौसी दादी आत्म मोहिनी थीं। जब कोलाबा सेवाकेन्द्र आरम्भ हुआ, हम बच्चे हमारी माँ और मौसी से मिलने जाया करते थे।

बाबा अपने हाथों से खिलाते थे

उन दिनों (ओम मण्डली के समय) मैं छः साल की एक नन्हीं लड़की थी; माँ ने मेरा दाखिला बाल निवास में करवा दिया था, जहाँ मैं अन्य आश्रम निवासियों के साथ रहने लगी। मुझे याद है, बाबा प्यार से मुझे अपनी गोदी में ले लेते थे या स्वयं अपने हाथों से मुझे खिलाते थे। कुछ समय बाद, जब हम अपनी आँखें खोलते थे तब बाबा पूछते थे कि हमने क्या देखा था। इस पर मेरा स्थिर रूप से जवाब होता था 'मैंने श्रीकृष्ण को देखा।' तब बाबा ने भविष्यवाणी की और माँ को बताया 'तुम्हारी इस बच्ची का बहुत अनोखा पार्ट रहेगा।'

ऋषि-मुनियों की कहानियाँ सुनाती थी

माँ अपनी शादी होने से पहले से ही काफी आध्यात्मिक थीं, अतः यह स्वाभाविक था कि वह यह चाहती थी कि हम भी उन महापुरुषों के गुणों और विशेषताओं को धारण करें जिनके महान् कर्मों से हमारे धर्म-शास्त्र भरे पड़े हैं। वह हमें महाभारत, रामायण और श्रीमद्भागवत से सन्त, ऋषि-मुनियों की कहानियाँ सुनाया करती थीं, विशेष रूप से रानी मदालसा की जिन्होंने अपने राजकुमार-पुत्रों में त्याग के संस्कार भरे थे। इन बातों ने निश्चित तौर पर, हमारे पहले से ही ग्रहणशील मन पर एक भिन्न छाप छोड़ दी थी।

जब मैंने वाटूमल हाउस छोड़ा और श्रीकृष्ण की नगरी वृन्दावन में गई, तो माँ

ने सबसे अधिक मिलनसारिता के साथ मुझे कोलाबा सेन्टर पर रहने के लिये स्थान दिया (बालकनी में एक पलंग) ताकि मेरे बॉम्बे आगमन के दौरान मुझे मेरे लौकिक परिवार वालों के पास जाने की आवश्यकता महसूस न हो।

योग्य और माननीय आत्मा

यह हम बच्चों के लिये विशेष बात थी कि हमारी माँ को इतना सम्मान मिला और वह पहली आठ दादियों में से एक थीं जो बाबा और मम्मा के पास आईं थीं। वह सचमुच में भरपूरता के साथ सबसे अधिक योग्य और माननीय आत्मा थीं जिनका सबसे अधिक अभिनन्दन हुआ। वह वास्तव में एक महान् आत्मा थीं, जो शिव बाबा के प्यार के प्रति लालायित होकर अन्य आत्माओं को ज्ञानवान बनाने और उनका मार्गदर्शन करने आई थी।

मैं हमारी माँ दादी पुष्पशान्ता जी को अपने हृदय से अभिवादन और श्रद्धांजलि अर्पित करती हूँ। हम इस धरती पर उन्हें अपनी माँ के रूप में पाकर धन्य-धन्य हो गये।

******

आदरणीय दादी पुष्पशान्ता जी के बारे में यह विवरण "आदि रतन" पुस्तक से लिया गया है।